IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायणकालीन राजधर्म एवं सुशासन की आधुनिक संदर्भ में उपयोगिता

डॉ0 जितेन्द्र थदानी
सहायक आचार्य (संस्कृत)
स0पृ0चौ0 राजकीय महाविद्यालय
अजमेर (राज)

चतुर्विंशतिसाहस्रीसंहिता के नाम से प्रख्यात रामायण का आर्ष महाकाव्यों में विशेष स्थान है महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण के सप्त कांडों 24000 श्लोकों में समाहित रामायण की कथा में राजधर्म और सुशासन का यत्र तत्र सर्वत्र वर्णन प्राप्त होता है उसी राजधर्म और सुशासन के कारण ही आज भी रामराज्य की कल्पना को लोग साकार करने की अपेक्षा करते है वस्तुतः रामायण के राजधर्म और सुशासन की वर्तमान में सर्वाधिक प्रासंगिकता है

रामायण के राज धर्म के और सुशासन के स्वरूप को जानने के लिए हमें रामायण कालीन समाज सभ्यता संस्कृति समाज व्यवस्था क्या जी का विवेचन करना पड़ेगा धारणा धर्म इत्याहू अनुसार जिसे धारण किया जाए वही धर्म है धर्म ही समाज को धारण करता है किंतु जब-जब धर्म विकृत हो जाता है तब तक समाज का भी पतन होता है वर्तमान समय में धर्म के विकृत होने के कारण से समाज दिन-प्रतिदिन पतन के गर्त में जा रहा है

जब भी मनुष्य धर्म च्युत हो जाता है तब तक समाज में रामायण और महाभारत जैसे युद्ध हुआ करते हैं जब धृतराष्ट्र अपने धर्म से प्रमाद करते हैं दुर्योधन अधर्म का आचरण करता है महा भारत होता है जब जब केकई अपने धर्म का त्याग कर देती है और शूर्पणखा अधर्म का आचरण करती है तब सीता का हरण होता है एवं राम रावण युद्ध होता है

इसी प्रकार से जब राजा भी अपने धर्म का राज धर्म का त्याग कर देता है तब तब निश्चित रूप से राज्य का विनाश हो जाता है

रामायण में इसी विनाश से बचने की एवं श्रेष्ठ राज धर्म एवं सुशासन के सूत्र यत्र तत्र विकीर्ण है की वर्तमान संदर्भ में बहुत अधिक प्रासंगिकता हरामायण के बालकांड के प्रथम सर्ग में जब देवर्षि नारद महर्षि वाल्मीकि से प्रश्न करते हैं उन्हीं प्रश्नों में ही एक राजा का धर्म उसकी योग्यताएं और उससे अपेक्षाएं निहित है जब महर्षि वाल्मीकि उस प्रश्न का उत्तर देते हुए राम की विशेषताओं का वर्णन करते हैं तब अपरोक्ष रूप से यह ज्ञात हो जाता है कि किस प्रकार का राजा एक धर्म का राज धर्म का और सुशासन का प्रणेता हो सकता है-

कोन्वस्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान्कश्च वीर्यवान् ।

धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥१-१-२॥

चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ।

विद्वान् कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥१-१-३॥

आत्मवान्को जितक्रोधो द्युतिमान्कोऽनसूयकः ।

कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥१-१-४॥

इन्हीं प्रश्नों का उत्तर देते हुए महर्षि वाल्मीकि नहीं भगवान राम के विषय में जो उनकी विशेषताएं बताएं हैं निश्चित रूप से वह एक राजा की आवश्यक योग्यताएं होती हैं तथा इन्हें योग्यताओं से युक्त राजा एक राज धर्म का पालन करने वाला तथा सुशासन को लागू करने वाला राजा बनता है तथा उसी का राज्य राम राज्य के रूप में प्रख्यात होता है

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः ।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥१-१-१२॥

प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः ।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता॥१-१-१३॥

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता ।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ॥१-१-१४॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो स्मृतिमान् प्रतिभानवान् ।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥१-१-१५॥

निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जिस राजा में इस प्रकार की विशेषताएं उपलब्ध हों वही राजा सुशासन प्रदान कर सकता है

सुशासन एवं राजधर्म का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अगर देखा जाए तो रामराज्य मैं देखने को मिलता है जिस अवधि में भगवान श्री राम राज्य का परित्याग करते हैं तथा वनवास के पश्चात जब राज्याभिषेक होने पर राज सत्ता का संचालन करते हैं प्रारंभ से ही देखा जाए तो राम का राज्य का सुशासन का अद्वितीय उदाहरण है जब माता कैकेयी पिता दशरथ के सामने अपने पूर्व प्रदत वरदानद्वय की याचना करती हैं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम राज्य में होने वाले भावी उपद्रव एव विद्रोह को देखते हुए सहज ही राज्य का त्याग है वनवास का वरण कर लेते हैं

साथ ही वनवास से आगमन पर जब राज्याभिषेक के पश्चात एक रजक के द्वारा जो अपवाद प्रसारित किया जाता है उस अपवाद के निवारणार्थ राजा होने के धर्म का पालन करते हुए धर्मपत्नी सीता का भी त्याग कर देते है

राम के वनवास के पश्चात जब भरत वहां चित्रकूट में राम से मिलने के लिए आते हैं तो वहां भी भगवान श्री राम भरत को जो उपदेश देते हैं उस उपदेश कि उस उपदेश में विद्यमान राजधर्म की वर्तमान संदर्भ में अधिक प्रासंगिकता है भगवान श्री राम भरत को समझाते हुए कहते हैं

हे भरत नीति शास्त्र में निपुण राजाओं के लिए मंत्रियों का परामर्श अत्यंत गुप्त रहना चाहिए तथा राजा को प्रत्येक रात्रि में प्रजा के कल्याण के उपाय का चिंतन करके ही शयन करना चाहिए कभी भी राजा को अकेले किसी विषय पर विचार नहीं करना चाहिए अभी तो मंत्रियों के साथ बैठ कर के उनके मंत्रणा एवं परामर्श के पश्चात निर्णय लेना चाहिए अल्प प्रयास से सिद्ध होने वाले और बड़ा फल देने वाले कार्य को करने का निश्चय करके तुरंत ही राजा को उसका कार्य प्रारंभ कर देना चाहिए और राजा को मंत्रियों के साथ की गई मंत्रणा एवं गुप्त चर्चा को लोग अनुमान से भी ना ज्ञात कर ले राजा का मुख्य मंडल एवं आकृति ऐसी होनी चाहिए राजा को हजार मूर्खों का त्याग करके एक पंडित का आश्रय लेना चाहिए इसी प्रकार से और भी बहुत सारा उपदेश राम भरत को देते हैं एवं एक सुशासन की नींव स्थापित रखने का मार्ग प्रशस्त करते हैं

मन्त्रो विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव ।

सुसंवृतो मन्त्रधरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः ॥ २.१००.१७ ॥

कच्चिन्निद्रावशं नैषीः कच्चित्काले प्रबुध्यसे ।

कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम् ॥ २.१००.१८ ॥

कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह ।

कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति ॥ २.१००.१९ ॥

कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम् ।

क्षिप्रमारभसे कर्त्तुं न दीर्घयसि राघव ॥ २.१००.२० ॥

कच्चित्ते सुकृतान्येव कृतरूपाणि वा पुनः ।

विदुस्ते सर्वकार्याणि न कर्त्तव्यानि पार्थिवाः ॥ २.१००.२१ ॥

कच्चिन्न तर्कैर्युक्त्या वा ये चाप्यपरिकीर्तिताः ।

त्वया वा वा ऽमात्यैर्बुध्यते तात मन्त्रितम् ।। २.१००.२२ ।।

कच्चित् सहस्रान् मूर्खाणामेकमिच्छसि पण्डितम् ।

पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्य्यान्निःश्रेयसं महत् ।। २.१००.२३ ।।

सहस्राण्यपि मूर्खाणां यद्युपास्ते महीपतिः ।

अथवाप्ययुतान्येव नास्ति तेषु सहायता ।। २.१००.२४ ।।

महाकवि भवभूति अपने नाटक उत्तररामचरितम् में राम के राजधर्म भाव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि अगर इस जनता के कल्याण के लिए लोक आराधन के लिए मुझे अपनी परम प्रिय पत्नी सीता का भी त्याग करना पड़े तुम ही मुझे रत्तीमात्र की भी व्यथा नहीं होगी

स्नेहं दयां च सौख्यं च

यदि वा जानकीमपि ।

आराधनाय लोकस्य

मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा ।

इस प्रकार इस शोध पत्र के माध्यम से में रामायण में विद्यमान राजधर्म और सुशासन की वर्तमान संदर्भों में प्रासंगिकता का विवेचन किया